एकादशमुख हनुमत् कवच

वैद्य पं. श्रीराम कौशिक, सालासर-331506

एकादशमुख हनुमत् कवच

सालासर प्रकाशन

वैद्य पं. श्रीराम कौशिक
सालासर-३३१५०६

प्रथम आवृति ५००० मूल्य ११)-

एक अपूर्व कवच

भगवत्तत्व साक्षात्कार या भगवच्चरणारविन्द - परमानुराग मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। यमनियमादि साध्य आत्मतत्व का साक्षात्कार सर्वजन सुलभ नहीं है। इसीलिये भगवन्नाम का संकीर्तन, उनकी अर्चना, वन्दना आदि रुप में उपासना का विधान शास्त्रों में किया गया है। उपासना का अर्थ है सान्निध्य में स्थिति। उपासक जो अनन्य भाव से भगवत् प्रवण होता है उसके ऊपर अहैतु की अनुकम्पा होती है। वह उपास्यनिष्ट हो जाता है। परिणामस्वरुप द्रवीभूत उसके मन की सगुण साकार सच्चिदानन्द धन पर ब्रह्माकारा कारित मानसी वृति हो जाती है जिसमें उपासक विगलितवेद्यान्तर सम्पर्क शून्य अपूर्व आनन्द की अनुभूति करता है। भक्ति की चरम परिणति इसी में हैं।

इस प्रकार की विलक्षण उपासना के सम्पन्न होने हेतु निर्गुण निराकार का सगुण साकार रूप में प्राकट्य होता है। जो असीम है वह ससीम हो जाता है। अवर्ण्य भी वाणी का विषय बन जाता है। उसके

अलौकिक कार्यकलाप भक्ति के आलम्बन अथवा उद्दीपन बन जाते हैं। इस प्रकार के उपास्यों में भगवान् शंकर, विष्णु, राम और कृष्ण की भांति अञ्जनानन्दन का भी स्थान है। इनके सम्बंध में अनेक कथानक उपलब्ध हैं। कहीं पर इन्हें अञ्जनानन्दन कहा गया है तो अन्यत्र शंकर सुवन कहा गया है। ये आशुतोष है। झटितिद्रवीभाव इनका नैसर्गिक धर्म है। तभी तो गोस्वामी तुलसीदास को इनका साक्षात्कार हुआ था। जीवन को परिष्कृत और सुव्यवस्थित बनाने में इनकी उपासना सदैव फलवती है।

प्रस्तुत पुस्तक में एकादश मुख वाले हनुमानजी की महत्ता वर्णित है। यह उनके अलौकिक शक्ति सामर्थ्य की अभिव्यञ्जिका है। निर्मल शान्त अन्तः करण सम्पन्न होकर इस "एकादश मुखहनुमत् कवच से समाराधित पवनात्मज, भक्तजन के अभीष्ट साधक होते हैं, यह बात संशयातीत है। विश्वास है आस्तिकजन सन्दोह इसके द्वारा सदा लाभान्वित होता रहेगा।

पं. विश्वनाथ मिश्र

व्याकरण साहित्याचार्य एम.ए.

आत्म निवेदन

भगवान् आशुतोष एकादशावतार मेरे परम आराध्य भक्तजनवत्सल श्री हनुमानजी महाराज की यह विलक्षण विग्रहाकृति मुझ अकिंचन द्वारा अनायास ही बन पड़ेगी, यंह हर्षातिरेक एवं विस्मय का विषय है। मैं इसे परम करुणा वरुणालय प्रभु आञ्जनेय मारुती नन्दन की अनन्य अनुकम्पा ही मानता हूं। लगभग अर्द्ध दशक पूर्व अपने अजमेर प्रवास काल में हम कतिपय साथी पद्मयोनि प्रजापति ब्रह्मा की तपोभूमि तीर्थराज पुष्कर में त्रिवि धतापहारी पंचकुण्ड पर स्नानोपरान्त आसीन थे। धार्मिक चर्चा के अन्तराल में ही अकस्मात् मेरे अभिन्न साथी वैद्य श्री राधेश्याम पण्डित ने आग्रह के स्वर में दृढ़ता पूर्वक कहा-श्री कौशिक! मेरे पास "एकादशमुख हनुमत् कवच है, आप

उसके आधार पर प्रभु का विग्रहांकन करने में सक्षम हो, चूंकि आप में तदनुरुप कमनीय कला कौशल एवं ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा विद्यमान है। मेरी आन्तरिक अभिलाषा है कि आप मेरे इस दिवास्वप्न को साकार परिणति प्रदान कर सकोगे। और मैंने तत्काल अन्तःकरण की प्रेरणा से इस शिव संकल्प की सम्पूर्ति हेतु सहज मौन स्वीकारोक्ति दे दी, किञ्च ततः प्रभृति मेरे स्मृति पटल में कल्पना का एक अन्तर्द्वन्द सतत प्रवाहित होता रहा। यदा कदा श्रीपण्डित द्वारा प्रदत्त कवच का पठन मनन व चिन्तन अवश्य कर लेता अस्तु संयोग कहिये अथवा सौभाग्य इस पुनीत कार्य सम्पादन में श्रद्धेय पं. श्री रामचन्द्र जी शास्त्री का सत्परामर्श एवम् भाषा टीका में अयाचित अभिनन्दनीय सहयोग सुलभ हुआ, तदर्थ विनम्र कृतज्ञताज्ञापन

मैं अपना दायित्व मानता हूं। भाषा और भावों को चित्रांकित करने का मूल उद्देश्य अभी शेष था। लाडनूँ प्रवास में यह एकादश मुखाकृति तैयार हुयी! इन दिनों 'श्री सालासर हनुमानजी सचित्र इतिहास एवं माहात्म्य' के द्वितीय संस्करण की तैयारी में संलग्न था। इस पुस्तक में श्री बालाजी की प्रतिमा प्राकट्य का प्रसंग है। लाडनूँ-जसवन्तगढ़ के बीच स्थित आसोटा ग्राम के भूभाग पर हल के ओटे प्रकट होने वाली विशाल कृष्ण पाषाण प्रतिमा में कृषक पत्नी ने इष्टदेव बाला साहब के कन्धों पर राम लक्ष्मण के दर्शन किये। आविर्भाव-त्रेतायुग के परि समापन काल में राम-रावण संग्राम के समय जब रावण तनय अहिरावण राम लक्ष्मण का अपहरण कर पाताल लोक में ले जाता है और महाकाली की प्रसन्नता के लिये बलि देने को उद्यत होता है, तभी प्रचण्ड

वेगशाली हनुमानजी अपने वास्तविक स्वरुप एकादश मुख रौद्ररुप को अंगीकार करते हैं। एक क्षण में ही त्रिगुणात्मकी समस्त शक्तियां समाहित हो गयी और उन्होंने राक्षसराज अहिरावण का संहारकर देव जाति को संकट मुक्त किया-

बन्धुसमेत जबे अहिरावण,
ले रघुनाथ पाताल सिधारो।
देविहिं पूजिभलीविधि सों
बलि देऊं सबे मिलिमंत्र विचारो॥
जाय सहाय भयो तब ही
अहिरावण सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में
कपि संकट मोचन नाम तिहारो॥

'एकादश मुख हनुमानजी की जय'

हनुमान जयन्ती
संवत् २०५३

वैद्य पं. श्रीराम कौशिक
भिषगाचार्य, एम.ए.
(वैदिक वाङ्मय)
सालासर-३३१५०६

एकादशमुखहनुमत्कवचम्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

लोपामुद्रोवाच ॥

कुम्भोद्भवदयासिन्धो श्रुतं हनुमतः परम् ॥
यन्त्रमन्त्रादिकं सर्वत्वन्मुखोदीरितंमया ॥१ ॥
दयां कुरु मयि प्राणनाथवेदितुमुत्सहे ॥
कवचं वायु पुत्रस्य चैकादशमुखात्मनः ॥२ ॥
इत्येवं वचनं श्रुत्वा प्रियायाः प्रश्रयान्वितम् ॥
वक्तुं प्रचक्रमे तत्र लोपामुद्रां प्रति प्रभुः ॥३ ॥

अगस्त्य उवाच ॥

नमस्कृत्य रामदूतं हनुमन्तंमहामतिम् ॥
ब्रह्मप्रोक्तं तु कवचं शृणु सुन्दरि सादरम् ॥४ ॥
सनन्दनाय सुमहच्चतुराननभाषितम्
कवचं कामदं दिव्यं सर्वरक्षोनिवर्हणम् ॥५ ॥
सर्व संपत्प्रदं पुण्यं मर्त्यानां मधुर स्वरे ॥
ॐ अस्य श्री कवचस्यैकादश वक्त्रस्य
धीमतः ॥६ ॥

एकादशमुखहनुमत्कवच

।। श्री गणेशाय नमः ॥

लोपामुद्रा बोली-

हे दयासागर अगस्त्य मुने! आपने श्री हनुमानजी के विषय में जो यंत्र मंत्रादिक्त बतलाये वो मैंने सब सुने ॥१ ॥ अब हे प्राणनाथ! मैं आपसे एकादश मुख वाले वायुपुत्र श्री हनुमानजी का कवच सुनने को उत्सुक हूँ; दयासागर बताइये ॥२ ॥ इस प्रकार अपनी प्रियतमाके विनयान्वित वचन सुनकर महामुनि अगस्त्य ने कहना शुरु किया ॥३ ॥ अगस्त्य जी ने कहा-हे सुन्दरि! मैं बुद्धिशाली रामदूत हनुमानजी को नमस्कार करके ब्रह्माके बताये हुये कवच को कहता हूँ, तुम सादर सुनों ॥४ ॥ यह कवच ब्रह्माजी ने सनन्दन के लिये बताया; जो यह कवच बहुत ही दिव्य, कामनाओं की पूर्ति करने वाला तथा राक्षसों का नाश करने वाला है । ।५ ॥ यह कवच सभी प्रकार की सम्पत्ति का दाता और मधुर स्वर में गाने से मनुष्य के पुण्य को बढ़ाने वाला है और यह बुद्धिमान

हनुमत्कवचमन्त्रस्य सनन्दन ऋषिः स्मृतः ॥
प्रसन्नात्मा हनुमांश्च देवताऽत्र प्रकीर्तितः ॥७ ॥
छन्दोऽनुष्टुप् समाख्यातं बीजं वायुसुतस्तथा ॥
मुख्यः प्राणः शक्तिरिति विनियोगः
प्रकीर्तितः ॥८ ॥
सर्वकामार्थसिद्ध्यर्थे जपएवमुदीरयेत् ॥
ॐ स्फ्रें -बीजंशक्तिघृक पातु शिरोमे
पवनात्मजः ॥९ ॥
क्रौं-बीजात्मा नयनयोः पातुमां वानरेश्वरः ॥
क्षं-बीजरुपी कर्णौ मे सीता शोक विनाशनः
॥१० ॥
ग्लौं-बीजवाच्यो नासां मे लक्ष्मण प्राण दायक ॥
वं-बीजार्थश्चकण्ठं मे पातु चाक्षय कारक ॥११ ॥
ऐं-बीजवाच्यो हृदयं पातुमे कपिनायकः ॥
वं-बीजंकीर्तितः पातु बाहूमे चाञ्जनी सुत ॥१२ ॥
ह्रां-बीजं राक्षसेन्द्रस्य दर्पहापातु चोदरम् ॥
ह्रं सौं-बीज मयो मध्यं मे पातु लंका
विदाहक ॥१३ ॥

एकादश मुख हनुमानजी का कवच है ॥६॥ हनुमत् कवच मंत्र के सनन्दन ऋषि माने गये हैं और प्रसन्नात्मा हनुमानजी इसके देवता माने गयें है ॥७॥ इस कवच में अनुष्टुप् छन्द तथा बीजाक्षर स्वयं वायुपुत्र है, प्राण इसमें मुख्य है, शक्ति इसका विनियोग है।।८॥ सब कार्यों की सिद्धि के लिये जप ही करना चाहिये। ॐ स्फ्रें बीजं शक्तिधारी पवनपुत्र हनुमानजी मेरे शिर की रक्षा करे॥९।।

क्रों-बीजात्मा वानरेश्वर मेरे नेत्रों की रक्षा करे। क्षम्- बीजरुपी सीता शोक विनाशक मेरे कानों की रक्षा करें ॥१०॥

ग्लौं-बीज वाच्य लक्ष्मण प्राणदाता मेरी नासिका की रक्षा करे।

वं-बीजार्थक अक्षय कारक मेरे कण्ठ की रक्षा करे ॥११॥

एं-बीजवाचक कपिनायक मेरे हृदय की रक्षा करें। वं-बीज वरिष्ठ अञ्जनि पुत्र मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें ॥१२॥

राम-बीजात्मक रावण के दर्प को हरने वाले मेरे उदर की रक्षा करें। हूं सौं-बीजात्मक लंका जलाने वाले मेरे मध्य भाग की रक्षा करें ॥१३॥

ह्रीं बीजवाचक देवेन्द्र मेरे गुप्त अंग की रक्षा करें। रं

ह्रीं-बीजधरः पातु गुह्यंदेवेन्द्रवान्दितः ॥
रं-बीजात्मा सदा पातु चोरु वारिधिलङ्घन ॥१४॥
सुग्रीव सचिवः पातु जानुनी मे मनोजवः ॥
पादौपादतले पातु द्रोणाचलधरो हरिः ॥१५॥
आपादमस्तकं पातु रामदूतो महाबलः ॥
पुर्वे वानर वक्त्रो मामाग्ने य्यां असुरान्तकृत् ॥१६॥
दक्षिणे नारसिंहस्तु नैर्ऋत्यां गणनायकः ॥
वारुण्यां दिशि मामव्यात्खग वक्त्रो हरीश्वरः ॥१७॥
वायव्यां भैरव मुखः कौबेर्यां पातुमां सदा ॥
क्रोडास्यः पातु मां नित्यमीशान्यांरुद्र रुपधृक ॥१८॥
ऊर्ध्वंहयाननः पातु त्वधः शेषमुखस्तथा ॥
रामास्यः पातु सर्वत्र सौम्यरुपी महाभुजः ॥१९॥

बीज युक्त समुद्र लांघने वाले मेरे ऊरु की रक्षा करें ॥१४॥

सुग्रीव के सचिव मन की गति से तेज उड़ने वाले मेरे घुटनों की रक्षा करें।

द्रोणाचल पर्वत को धारण करने वाले वे हरि पैरों की रक्षा करें ॥१५॥

महाबलशाली रामदूत पैरों से लेकर शिर पर्यन्त मेरी रक्षा करें।

पूर्व दिशा में वानर मुख सौम्यस्वरुप वाले तथा अग्नि कोण में वानर मुख रौद्ररुप वाले असुरों का अन्त करने वाले मेरी रक्षा करे ॥१६॥

दक्षिण दिशा में नृसिंह रुपधारी और नैऋत्यकोण में गणनायक मेरी रक्षा करे। पश्चिम दिशा में पक्षीमुख वाले पवन पुत्र मेरी रक्षा करें।॥१७॥

वायव्य दिशा में भैरव मुख हनुमानजी, उत्तर दिशा के शूकरमुख वाले तथा ईशान कोण में रुद्ररूपधारी हनुमानजी मेरी रक्षा करे ॥१८॥

ऊपर की ओर घोड़े का मुख वाले, नीचे की ओर शेष मुख वाले तथा सर्वत्र दिशाओं में सौम्यस्वरुप राम मुख वाले तथा बड़ी भुजा वाले मेरी रक्षा करे ॥१९॥

इत्येवं रामदूतस्य कवचं प्रपठेत्सदा ॥
एकादशमुखस्यैतद गोप्यं वै कीर्तितं मया ॥२० ॥
रक्षोघ्नं कामदं सौम्यं सर्वसम्पद्विधायकम् ॥
पुत्रदं धनदं चोग्रं शत्रुसंघ विमर्दनम् ॥२१ ॥
स्वर्गापवर्गदं दिव्यं चिन्तितार्थ प्रदं शुभम् ॥
एतत्कवचमज्ञात्वा मन्त्रसिद्धिर्न जायते ॥२२ ॥
चत्वारिंशत्सहस्त्राणि पठेच्छुद्धात्मनानरः ।।
एकबारं पठेन्नित्यं कवचं सिद्धिदं पुमान् ॥२३ ॥
द्विवारं वा त्रिवारं वा पाठादायुष्यमाप्नुयात् ॥
क्रमादेकादशादेव मावर्तन जपात्सुधीः ॥२४ ॥
वर्षान्ते दर्शनं साक्षाल्लभेत नात्र संशयः ॥
यं यं चिन्तयते चार्थं तं तं प्राप्नोति पूरूषः ॥२५ ॥
ब्रह्मोदीरितमेतद्धि तवाग्रे कथितं महत् ।। २६ ॥

इस प्रकार सदैव रामदूत का यह कवच पढ़ना चाहिये।

एकादश मुख हनुमानजी के इस गोपनीय कवच को मैंने तुम्हे बता दिया है ॥२०॥ यह कवच राक्षसों का नाश करने वाला, इच्छाओं को पूर्ण करने वाला, बहुत ही सौम्य सब प्रकार की सम्पत्ति को देने वाला, पुत्र और धन देने वाला तथा शत्रु समुदाय को नष्ट करने वाला है ॥२१॥ स्वर्ग और मोक्ष का देने वाला दिव्य स्वरुप, चिन्तित पदार्थ को देने वाला यह कवच है। बिना इस कवच के जाने मंत्र सिद्धि नहीं होती है ॥२२॥ चालीस हजार बार शुद्ध आत्मा से इसको पढ़े। जो मनुष्य इसको एक बार पढ़ता है तो उसे सिद्धि प्राप्त होती है ॥२३॥ दो अथवा तीन बार पाठ करे तो आयुष्य प्राप्त होता है और ग्यारह बार आवर्तन जप से बुद्धिमान बनता है ॥२४॥ वर्ष के पश्चात् दर्शन प्राप्तकर लेता है, इसमें कोई संदेह नहीं है, और जिस-जिस पदार्थ का चिन्तन करता है उसे वह प्राप्त कर लेता है ॥२५॥ मैंने ब्रह्माजी के मुख से कहे गये इस महान कवच को तुमसे कह दिया है ॥२६॥

इत्येवमुक्त्वा वचनं महर्षि-

स्तूष्णींबभूवेन्दुमुखीं निरीक्ष्य॥

संहृष्ट चित्ताऽपि तदा तदीय-

पादौ नमामीतिमुदा स्वभर्तुः॥२७॥

इत्यगस्त्य संहितायामेकादश मुख हनुमत्कवचं संपूर्णम्॥

इति मारुतिस्तोत्राणि वृहत्स्तोत्र रत्नाकरः॥

इस प्रकार महर्षि अगस्त्य यह कवच कहकर चन्द्रमुखी पत्नी लोपामुद्रा को देखकर शान्त हो गये तथा प्रसन्नचित्त लोपामुद्रा ने भी उस समय अत्यन्त प्रसन्नता से अपने पति के चरणों में प्रणाम किया।

अगस्त्य संहिता में वर्णित एकादश मुख हनुमत् कवच पूर्ण हुआ।

बृहत्स्तोत्र रत्नाकर का यह मारुतिस्तोत्र समाप्त हुआ।

श्री सालासर हनुमानजी

(सचित्र इतिहास एवम् माहात्म्य)

सालासर प्रकाशन

प्रिय पाठक,

प्रातः स्मरणीय भक्त मोहनदास जी महाराज के जीवन चरित्र एवं प्रतिमा प्राकट्य विषयक इतिहास, मंदिर की नित्य एवं नैमित्तिक उपासनाएँ, श्री बालाजी की प्रशंसा में प्रचलित लोकर्ग.त एवं भजन, श्री सालासर अञ्जनी माई स्थापना, इतिवृत एवम् उपासना तथा श्री सालासर ग्राम दर्शन एवं स्थानीय साधु-सन्त विषयक पांच खण्डों में प्रस्तुत पुस्तक को सन् 1978 में फलाहारी बाबा की प्रेरणा पाकर सेठ चम्पालाल दूगड़ ने छपवाया। अब इसके द्वितीय संस्करण के संशोधन परिवर्द्धन का कार्य हो रहा है। सर्वउपयोगी तथा सर्व सुलभ कराने की दृष्टि से यह श्रम तब ही सफल होगा जब आप सबकी सहभागिता इससे जुड़े।

आपसे इस विषयक अनूठी सामग्री आमंत्रित है।

ओम प्रकाश मिश्र
सम्पादक
२४ [illegible] श्रीरामपुर-७१२२०१

वैद्य पं. श्रीराम कौशिक
लेखक
सालासर-३३१५०६

एकादशमुख हनुमानजी की आरती

आरती ग्यारह-मुखी हनुमान की ।
गुरु गरिमा वरु महिमा महान की ।।
आनन वानर भैरव शेषा,
गरुड़ अश्व नरसिंह महेशा
असुर निकन्दन - सिद्ध गणेशा,
राम वराही रुपवान की ।।आरती...............।।१।।
अहिरावण तारण बलवंता,
खल के काल भक्त भय हंता ।
एकादशरुप भये हनुमंता,
पौरुषमय कौशल निधान की ।।आरती.........।।२।।
ग्यारह मुखी यह रुप कपि का,
सत्य सनातन वचन व्रती का ।
लोपामुद्रा सन् अगस्त्य ऋषिका,
सनन्दन हित ब्रह्मा सुज्ञान की ।।आरती.........।।३।।
जो जन प्रेम से आरती गावे,
मन वांछित इह लोकनि पावे ।
अन्तहरि पहि सहजहि जावे,
श्री रामदूत सेवक सुजान की ।।आरती.........।।४।।

मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रिंटर्स, देवीपुरा बालाजी मंदिर के पास
सीकर फोन : 51300, 53900